Ancient History – B.A. Honours

Question:→ Career and achievement of Jayvarman VII.

Answer:→ 12वीं शताब्दी के अंतिम भाग में गृहयुद्ध एवं जयावर्मन के आक्रमण के कारण कंबुज देश की राजनीतिक परिस्थिति अत्यंत गंभीर हो चली थी, जिसे सम्भालने का श्रेय जयवर्मन VII को ही है। यह 1181 में कंबुज के राजसिंहासन पर बैठा। प्रो० हॉल के अनुसार गद्दी पर बैठते ही जयवर्मन VII को एक विद्रोह का सामना करना पड़ा। यह विद्रोह बटमबंग प्रांत के मलयांग राज्य में हुआ था। जयवर्मन VII ने इस विद्रोह का सामना करने के लिए विद्यानंदन नामक चाम राज युवराज को भेजा। विद्यानंदन संभवतः चाम युवराज था जो शरणार्थी रूप में कंबुज आ गया था। विद्यानंदन को विद्रोह दबाने में सफलता मिली।

जयवर्मन मात्र इस विद्रोह से ही ~~शांत~~ संतोष धारण न कर सका। अपने प्राचीन शत्रु चम्पा को ध्वस्त करने के लिए उसका ~~अ~~ हृदय रह-रह कर आक्रोशित हो रहा था। ऐसे समय में उसे ~~विद्यासाग~~ विद्यानंदन जैसे युवराज की सहायता भी प्राप्त हो गया। परिणामतः ~~सामत~~ चंपा के विरुद्ध एक सैनिक प्रयाण योजना बन गई। इस समय चंपा में जयइन्द्र वर्मन II शासक था। 1190 ई० में जयवर्मन VII ने इसके विरुद्ध एक सैनिक टुकड़ी विद्यानंदन के नेतृत्व में भेजा। युवराज ने चंपा पहुँचकर जयइंद्र वर्मन को पराजित किया तथा बंदी के रूप में उसे कंबुज लेकर प्रत्यावर्तित हुआ। विजय श्री के उपरांत कंबुज नरेश चंपा को दो भागों में विभाजित कर एक भाग पर अपने श्यालक सूर्य जयवर्मन देव को नियुक्त किया। उसकी राजधानी विजय बनी। दूसरे भाग पर युवराज विद्यानंदन स्वयं सूर्यवर्मनदेव नाम धारण कर दक्षिणी भाग पर शासक बना। उसकी ~~सं~~ राजधानी राजपुर थी। उस समय चंपा दो भागों में विभाजित हो चुका था। दोनों पर दो शासक शासन कर रहे थे। पर यह स्थिति अधिक दिनों तक न रही। कंबुज नरेश को अब ~~भी~~ भी चंपा की ओर से शं

मिला। डा० मजुमदार का मत है कि दो वर्षों बाद ही रुद्रपति नामक एक स्थानीय सरदार ने सूर्यजयवर्मनदेव पर आक्रमण करके उसे पराजित कर दिया तथा श्री विजय पर अधिकार भी कर लिया। उसने भी अपना नाम श्री जय इन्द्रवर्मन देव धारण किया। तीसरी शताब्दी के लेखक मैन-मैन के अनुसार 283 ई० में कुछ देशिय पदार्थ तथा गायक को भेंट के रूप में चीन के शासक के पास भेजी। इसी के समय में पश्चिमी भारत के तन-मंग का निवासी किअ-सिंग लीमी व्यापार के संबंध में फूनान पहुँचा और उसने अपने देश का इतना सुंदर चित्र खींचा कि सम्राट ने सुव नामक एक दूत को भारत भेजा। सम्राट ने उसका स्वागत किया और यू-चे देश का भार जोड़े उस दूत को उसके शासक के लिए भेंट किया।.... वर्ष बाद दू-दू अपने देश वापस पहुँचा, पर वहाँ हालत एकदम बदल गयी थी। फान मै-मन के छोटे भाई ने फान मंग का वध कर डाला था। पर, सेनापति फान सिउन उसे मारकर स्वयं राजा बन बैठा।

इसके समय में दो चीनी दूत कंग-ताई और चू-यिंग फूनान आये और उन दोनों ने ग्रंथ लिखे जिसमें देश की राजनीतिक स्थिति का वर्णन है। कंग-ताई के ग्रंथ के से बाद के इतिहासकारों ने भी बहुत सा वृतांत अपनी पुस्तकों में लिखा है। इसमें भारत के विषय में भी मैन सोक द्वारा प्राप्त कुछ वृतांत लिखा है। इसका कथन है कि भारत का राजा म्यू-लुन कहलाता था और उसके देश की राजधानी (किजेक) और श्रावस्ती इत्यादि थे। राज्य की शैली के अनुसार म्यु-लुन की समानता मुरुण्ड नृप से की जा सकती है। इनके विचार में इस वंश का कुषाणों से संबंध था। कंग-ताई के वृतांत के अनुसार इसने देश में नग्न रहने की प्रथा को बंद किया। इसके अपने समय में 268, 285, 286 एवं 287 में भारदूत फूनान से चीन भेजे गये।

फूनान के इतिहास में पुनः परिवर्तन हो चुका था। इसा की चौथी शताब्दी के अंत अथवा पाँचवी के आरंभ में हम फूनान के राज्य में एक अन्य कौडिन्य (Kaundinya) को सम्राट के रूप में पाते हैं। लिमयवंश के इतिहास में वर्णन मिलता है कि वह दैवी प्रेरणा से प्रेरित होकर फूनान गया तथा वहाँ शासन किया। चीनी स्रोत में इसका नाम Kiao chen Ju मिलता है जिसका समीकरण कौडिन्य से किया जाता है।

Scanned with CamScanner

फूनान के इतिहास में कौण्डिन्य का नाम प्रशंसा के साथ लिया जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस समय फूनान में भारतीय संस्कृति के प्रवाह में शिथिलता आ गयी थी। भारतीय देवताओं की पूजा भारतीय वर्णमाला का प्रभाव आदि का आरंभ हो चुका था। अब फूनान नरेश भारतीय नाम धारण करना प्रारंभ कर दिये थे। कौण्डिन्य द्वितीय के बाद उसका उत्तराधिकारी जिसका संकेत चीनी साक्ष्य में है। यह संभवतः श्रीइन्द्रवर्मन अथवा श्रेष्ठवर्मन का चीनी रूप है। इसने सम्राट वेन के पास कई दूत मण्डल भेजा था। इसके बाद जयवर्मन अथवा कौण्डिन्य जयवर्मन फूनान की गद्दी पर आता है। इसके प्रारंभ की तिथि पता नहीं है। इसका पारिवारिक नाम कौण्डिन्य था। उसने व्यापार के लिए कुछ व्यापारियों को कैंटन भेजा था। लौटते समय नागसेन नामक भारतीय भिक्षु भी फूनान आया। फूनान के आने से उन्हें चंपा में रुकना पड़ा था। वहां के निवासियों ने उनका संपूर्ण (पूरा) सामान लूट लिया। किसी प्रकार नागसेन फूनान पहुंचा। 485 में जयवर्मन ने चीनी सम्राट के पास विविध उपहारों के साथ, जिसमें नागसेन भी एक राजदूत भेजा तथा चंपा के विरुद्ध उसने मांग की। चीनी सम्राट ने चंपा नरेश की कटुनिंदा तो की पर उसके विरुद्ध किसी भी प्रकार की सैनिक सहायता करने की असमर्थता प्रकट की। 503 ई० में जयवर्मन ने पुनः एक दूत भेजा जिसमें बुद्ध की प्रतिमा भी थी। डा० मजूमदार का विचार है कि इसके काल में दोनों देशों में मधुर संबंध थे। प्राप्त वर्णन से सिद्ध होता है कि जयवर्मन एक महान सम्राट था। चीनी सम्राट ने उसे जेनरल ऑफ द पेसीफाइड साउथ किंग ऑफ फूनान की उपाधि से विभूषित किया था। इसकी मृत्यु के उपरांत रुद्रवर्मन जो एक गणिका का पुत्र था, अपने छोटे भाई गुणवर्मन की हत्या करके गद्दी पर बैठा।

रुद्रवर्मन फूनान इतिहास का अंतिम अंकित सम्राट है जिसके पश्चात फूनान का इतिहास अंधकार में पुनः विलीन हो जाता है। इसने ई० दूतमण्डल चीन भेजा था पर इसके विषय में किसी ऐतिहासिक घटना का उल्लेख नहीं है। इसके शासनकाल में अथवा इसके शीघ्र ही बाद फूनान पर कंबुज आक्रमण कर देता है और सातवीं सदी की समाप्ति के पूर्व ही फूनान पर पूर्णतया कंबुज का अधिकार हो जाता है। इस तरह फूनान का राजनैतिक इतिहास का अंत अवश्य हो गया पर भारतीय संस्कृति की छाप निश्चय पूर्वक दीर्घकालिन रही।

Scanned with CamScanner